किसानों द्वारा उर्वरकों का समुचित उपयोग

*22. **श्री जगदम्बी प्रसाद यादव :** क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या उन्होंने 'खेती' के नवम्बर, 1981 के अंक में प्रकाशित अपने एक निबंध में उर्वरकों के उपयोग में पोषक तत्वों के बेकार हो जाने की संभावना का उल्लेख किया था ; और

(ख) यदि हां, तो भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा इस संबंध में अब तक क्या कदम उठाये गये हैं ?

THE MINISTER OF AGRICULTURE AND RURAL DEVELOPMENT AND CIVIL SUPPLIES (RAO BIRENDRA SINGH): (a) and (b) A statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) Yes, Sir.

(b) Fertiliser losses under farmers' field conditions are almost universal. Research studies have indicated utilisation of only about 30 per cent fertilizer nitrogen in case of paddy and 50 to 60 per cent in upland irrigated 'Rabi' crops. Only 15 to 20 per cent of the *applied phosphorus* is utilised by the first crop but the succeeding crop benefits from some residual phosphorus. In the case of potassium, 30 to 40 per cent of the fertiliser is utilised in the year of application.

Considering the importance of the problem the Indian Council of Agricultural Research is carrying out a number of experiment under different Agro-climatic condition through its research Institutes, Co-ordinated Research Projects and *ad hoc* research schemes with the objective of reducing the losses, increasing the fertilisers use-efficiency and thus economising on the use of chemicals fertilizers.

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : श्रीमन्, मैं मंत्री महोदय का ध्यान उनके लिखित निबंध की ओर ले जाना चाहता हूं । मैं समझता था कि निबन्ध को जो उन्होंने लिखे हैं मेरे प्रश्न पूछने के बाद पढ़े होंगे । मैं यह जानना चाहता हूं कि भारतवर्ष में कितनी सिंचित जमीन है और उस सिंचित जमीन में कितनी जमीन ऐसी है जिसकी मिट्टी की माइनर और मेजर, दोनों तरह की जांच हुई है । आपने ही लिखा है कि जहां उर्वरक का उपयोग सही ढग से हो उसके लिये पानी मिट्टी, जमीन और उर्वरक इन चीजों की समय-समय पर जांच हो और इसकी रिपोर्ट किसानों को जाय । तो इस प्रकार कितनी जमीन की जांच हुयी जो कि भारतवर्ष में किसानों के पास है । यह मेरा प्रश्न 'क' है । 'ख' यह है कि भारत वर्ष में मिनिमम खाद का प्रयोग होता है । यहां पर 31 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर खाद का प्रयोग होता है जबकि दुनिया के दूसरे देशों में 250 किलोग्राम तक इसका उपयोग होता है । आपने अपने निबन्ध में कहा है कि 1979–80 तक 1950 के बनिस्बद 79 हजार टन से 25 लाख टन हो गया है और 1979 में यह 53 लाख टन हो गया है और आगे उम्मीद की जाती है कि यह 96 लाख टन होगा । लेकिन इस संदर्भ में मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या खाद के दाम बढ़े हैं और उस के बढ़ने के हिसाब से जिस गति से खाद के दाम बढ़े हैं उसी गति से खाद का उपयोग बढ़ा है क्या ? 'ग' यह आपको पता है कि ...

श्री सभापति : एक-एक करके पूछिये ।

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : श्रीमन्, यह लेख उनका था । मैं सोचता था कि लेख के वे रिटिन रिपोर्ट दे दिये होते

और अपने ही जो क्वेश्चन उन्होने रेज किये हैं उसका ही जवाब भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् में दे दिया होता तो मुझे इतना पूछने की आवश्यकता न होती। लेकिन मैं लाचार हूं। उन्होंने जो पेपर ले-डाउन किया, उसमें दो शब्द कह दिये हैं कि जांच हो रही है और यह कहकर वह निकल गये। इसलिये मैं लाचार हूं और इसीलिये उनके लेखों का उल्लेख कर के मैं उनसे पूछना चाहता हूं और उन्हीं को खाली मैं रेफर करना चाहता हूं। उन्होने कहा है कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् को किसानों को सारी चीजों की जांच करके देनी चाहिये। आज एक स्लोगन चला है। श्रीमान् कि लैंड टु लैंड इस संदर्भ में मैं यह जानना चाहता हूं कि लैंड टू लैंड में भारत सरकार ने कहां तक आगे प्रगति की है ?

राव बीरेन्द्र सिंह : जनाब, अगर आप गौर फरमायें तो माननीय सदस्य ने फर्टिलाइजर के मुत्तलिक सिर्फ पूछा है। जमीन का क्लासिफिकेशन और सर्वे का जो नतीजा है वह अगर वे पूछना चाहते हैं तो अलग से नोटिस दें। मैं ठीक-ठीक बता दूंगा।

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : श्रीमन्, मैं किसी कीमत पर माननीय मंत्री जी को विषय से डाइवर्ट करना नहीं चाहता। मैं जानता हूं और आप जानते हैं और सारा सदन जानता है कि उर्वरक का वहीं पर उपयोग होता है जहा सिचाई की व्यवस्था ठीक-ठाक रहती है और उर्वरकों का ठीक-ठीक उपयोग वहीं हो सकता है जहां कि मिट्टी की प्रोपर जांच की हुयी हो और जब तक मिट्टी की प्रोपर जांच न की हुयी हो तब तक उर्वरक का पूरा उपयोग नहीं हो सकता है और शायद भूलते हैं, भारतीय कृषि विकास ने उर्वरको का उपयोग, यह इनका एक निबन्ध है। इसीलिये यह कहना जब तक सिंचित जमीन का पता न हो, जमीन की मिट्टी की जांच न की गई हो तब तक उर्वरकों का काम हम कैसे बता सकेंगे और मैं कैसे पूछ सकूंगा। इसलिये यह कहना हमने यह समूचे लेख में दिया हुआ है...

श्री सभापति : अब आप इनकी राय ले लीजिये।

राव बीरेन्द्र सिंह : राय तो मालूम कर ली और मैं उनकी राय से बिलकुल मुत्तफिक हूं कि जब तक जमीन की जांच न हो तब तक यह तय नहीं किया जा सकता कि किस किस्म.....

श्री सभापति : एक ही किस्म का खाद सब जगह थोड़े डाला जाता है।

राव बीरेन्द्र सिंह : लेकिन वे तो पूछ रहे हैं कि सारे हिन्दुस्तान में किस-किस किस्म की कितनी-कितनी जमीन है और कहां-कहां पर इसका सर्वे किया गया है और जहां-जहां सर्वे किया गया है वहां की सारी बातें मैं आज कैसे बता दूं। मैं सिर्फ इतना अर्ज करना चाहता हूं कि यह जो मैंने कहा कि और जिस लेख का इन्होंने जिक्र किया उसमें मैंने कहा जमीनें मुख्तिलिफ किस्म की हैं, उनमें जितना खाद यूटिलाइज होता है, बरबाद होता है, वह भी जमीन की किस्म के ऊपर मुनहसिर है। अगर एक जमीन ऊंची है, उसके अन्दर पानी भी बहुत अच्छा लगता है, इरीगेशन ठीक ठीक हो तो वहां खाद का यूटिलाइजेशन ज्यादा होगा। पैडी वगैरह में पानी भरा रहता है, जहां पर पे कर निकल जाता है, वहां लीचिंग ज्यादा होगा, वहां पर खाद बरबाद होगा।

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : श्रीमन्, मन्त्री जी मैंने यह नहीं पढ़ा मैं जानता हूं शायद माननीय अध्यक्ष जी को भी पता होगा कि नहीं, भारत सरकार अरबों रुपये भारतीय कृषि अनुसंधान

परिषद् पर खर्च करती है और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् का चारों तरफ फैलाव है और उसने एक-एक जमीन की जांच कर रखी है। उन पर पूरा जोखा है लेकिन अगर आप उसको पढ़ना न चाहे और आप देश के लोगों और संसद् सदस्यों को बताना न चाहे। आप अगर यह बता दें, ऐसे किसान हैं जिनके पास गांव में यह पत्रिका नहीं पहुंचती, जिनके पास लैंड है लेकिन उनको यह पता नही...

राव बीरेन्द्र सिंह : यह आप के पास है।

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : मैं तो खोज कर निकाला हूं और निकाल कर पूछ रहा हूं। मैं समझता हूं कि आप इसको कृपा करके जवाब देने के लिये तैयार नहीं हैं।

श्री सभापति : सवाल तो आपका है ही नहीं। सवाल तो आप पूछ ही नहीं रहे हैं, मालूम नही क्या खोज रहे हैं।

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : मेरा प्रश्न यह है कि खाद की जो बरबादी होती है सारे देश में उस खाद की जिस की कीमत है उस खाद की बरबादी को रोकने के लिये भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् ने, यह उन्होंने बात की है 1981 की, लेकिन आज 1982 में जुलाई जा रहा है आज तक कौन-कौन योजना बनाई गई, कौन-कौन कार्यवाही हुई, कौन से कदम उठाये गये जिससे यह कीमती उर्वरक बरबाद न हो, इसका जबाब मंत्री जी नहीं दे रहे हैं।

राव बीरेन्द्र सिंह : अब पूछा है, इसका मैं जवाब देता हूं। पांच आल-इंडिया कोआर्डिनेटेड प्रोजेक्ट्स इस पर काम कर रहे हैं और उनकी रिसर्च का जो नतीजा होता है उसको हम एक्सटेंशन वर्कर्ज के जरिये, ट्रेनिंग और विजिट्स सिस्टम हमारा है उसके जरिये किसानों तक पहुंचाते हैं कि किस किस्म का खाद डाल कर खाद को बरबाद होने से बचा सकते हैं और कैसे बचत कर सकते हैं और फसलों को लाभ पहुंचाया जा सकता है। इसके बाद दूसरा है आल-इंडिया कोआर्डिनेटिड एग्रोनोमिक रिसर्च प्रोजेक्ट है, लांग टर्म फर्टिलाइजर्स एक्सपेरीमेंट्स आई० सी० ए० आर० का प्रोजेक्ट है। यह सारे तजुर्बे उनको हो रहे हैं। माइक्रो न्यूट्रियेंट्स, आल इंडिया रिसर्च प्रोजेक्ट, सोअल टेस्ट एंड क्राप रिसपोंस का अलग एक प्रोजेक्ट है। इसी तरीके से सोअल फिजिकल कंडीशन का प्रोजेक्ट है। एक बाओलोजिकल, न्यूट्रियेंट फिक्सेशन का अलग से प्रोजेक्ट कायम हुआ है। तो यह जितने रिसर्च प्रोजेक्ट्स हैं सारे हिन्दुस्तान में जांच कर रहे हैं कि किस तरीके से खाद का सही इस्तेमाल हो सकता है और किस तरीके से खाद को बचाया जा सकता है। बरबाद होने से और किस तरह से किसान ज्यादा से ज्यादा फायदा उठा सकते हैं। अगर आप चाहें तो यह हमारी किताबें भी मंगा कर पढ़ सकते है। इनमें सारी रिसर्च पब्लिश होती है यूनिवर्सिटी के जरिये से भी पब्लिश होती है तथा स्टेट गवर्नमेंट्स उनको आम लोगों तक पहुंचाने के लिये रीजनल भाषाओं में पब्लिश कराती हैं।

एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट्स के अन्दर यह सारा ब्यौरा होता है। आपको अगर और कोई दिक्कत होती है तो आप जो कहेंगे मैं सारी चीज आपके पास भिजवा दूंगा।

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : मै जो पूछ रहा हूं यह उसका जवाब नही है।

श्री सभापति : जवाब दे दिया है ।

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : सवाल यह है कि जो लिखकर दिया है क्या वही पढ़ देंगे । उन्होंने जो कोआपरेटिव्स बताये हैं उन्होंने काम क्या किया है । अरबों रुपया खर्च करने के बाद काम क्या हुआ है । हम पूछते हैं कि इसकी सिंचाई . . . (व्यवधान) मिट्टी की जांच की बात . . . (व्यवधान) कौन-कौन सी योजनायें हैं जिसमें मिट्टी की जांच हो रही है ।

श्री सभापति : उन्होंने बताया है ।

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : नहीं बताया है । यह भी बता दें कि कितनी-कितनी जमीन में मिनिरल्स के लिए मिट्टी की जांच हो रही है . . . (व्यवधान) मिट्टी मे मिनरल्स की कमी है । यह तो उन्होंने नहीं बताया है . . . (व्यवधान) क्वेश्चन पूछते हैं उसका जवाब आना चाहिये . . . (व्यवधान) या उनसे पुस्तक मंगाकर पढ़ ली जाय । हमने सदन में पूछा है किसानों के लिए पूछा है, यह मैं जानता हूं कि सदन में जब-जब गरीब किसानों की बात की जाय तब-तब कोई जवाब सही-सही नहीं मिलता है । जब मैं उर्वरक की बात करूं तो उसकी पूरी बात का पता नहीं चलता, जब मिट्टी की जांच की बात करूं और अगर मैं पूछूं कि गंगा के किनारे 21 करोड़ लोग बसते हैं उनकी जमीन हर साल बदलती है क्या उसको कोई योजना है ? तो उसका पता नहीं चलता । इनकी भारतीय अनुसन्धान परिषद् में एक भी व्यक्ति नहीं जो इसके बारे में जाने । अगर मैं प्रश्न पूछू और टालमटोल की जाय . . . (व्यवधान)

श्री सभापति : आपने जो कुछ पूछा है, उसका जवाब वे जितना दे सकते है उन्होंने दिया है . . .

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : इसमें जो क्वेश्चन उन्होंने रेज अप किये हैं मैंने उन्हीं क्वेश्चन्स को रेज किया है । जो आप ने लिखकर कहा है उसको इतनी दूर तक आपकी कृषि अनुसन्धान परिषद् या और भी जो सस्थायें हैं उन्होंने पूरा किया है या नहीं और कहां तक उसको आगे बढ़ाया है . . . (व्यवधान) . . यह उनके ही सवाल हैं (व्यवधान)

श्रीमन्, अगर यह बात उठाऊं . . . आज आपकी भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् में डाक्टर एम० एस० स्वामीनाथन नहीं हैं, डाक्टर रनधावा नहीं है, डाक्टर . . . (व्यवधान) और कुछ पूछना चाहूं, उन्होंने एक सवाल का कोई जवाब नहीं दिया . . . (व्यवधान) संरक्षण हमें मिलना चाहिये, संरक्षण मिनिस्टर साहब को नहीं मिलना चाहिये ।

श्री सभापति : ये आपके सवाल नही हैं, ये इल्जामात हैं । आप सवाल अगर सही तरीके से पूछें तो उसका जवाब मिलेगा और अगर आप सही तरीके से सवाल नहीं पूछेंगे तो उसका जवाब देने की मैं उनको इजाजत ही नहीं दूंगा . . . (व्यवधान)

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : मैंने श्रीमन्, सवाल सीधा पूछा था, कितनी सिंचित जमीन में मिट्टी की जांच हुई है जिसमें उर्वरक का प्रयोग होता है । यह मुझे बता दें । उस उर्वरक में कितना सही होता है, कितना गलत होता है । यह उनका लिखा है । यह उनका लिखा है . . . (व्यवधान) मैं उर्वरक का उपयोग पूछ रहा हूं . . . (व्यवधान) तो सुरक्षा हमको मिलेगी या सुरक्षा उनको मिलेगी . . . (व्यवधान) मैंने पूछा कि एक हेक्टेयर में यहां कितना उर्वरक प्रयोग होता है जब कि दुनिया में ढाई सौ किलोग्रोम एक

हेक्टेयर में होता है, और आज जो दाम बढ़ गया है उसके कारण जो प्रगति. . . (व्यवधान) उसका जवाब नहीं बता रहे हैं । यह प्रश्न नही है तो क्या है ?

श्री सभापति : सवाल कहां है , आप क्या पूछ रहे है । आप दुनियां भर की बात पूछ रहे हैं । माफ करिए यह सवाल नहीं है . . . (व्यवधान)

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : उनके उठाये किसी प्रश्न का जवाब नहीं है ।

श्री सभापति : इसको सही करने के लिए एक ही तरीका है, अब जो मेम्बर साहब बोलेंगे उसको रिकार्ड नहीं करेंगे । बेकार वक्त जाया करना बहुत आता है . . .

श्री रामेश्वर सिंह : . . . (व्यवधान)

श्री सभापति : रामेश्वर सिंह का भी मत लिखिये ।

SHRI SYED SHAHEDULLAH: Sir, the Minister has said that it is related to the quality of soil. Now, can he assure us that every farmer who applies for the testing of his soil will be given this facility? Has he made adequate arrangements so that the farmer gets the result of testing within the quickest possible time and he is in a position to know as to what quality of soil his farm is having and what kind of fertiliser he will need? Will he be able to know these things in the shortest possible time. In one of the CSIR books it has been mentioned that one farmer applied for the testing of his soil and it took him two years to receive the result of this testing.

MR. CHAIRMAN: Let me put it. Delay in supply and delivery is the question.

RAO BIRENDRA SINGH: I do not know supply of what is being referred to by the hon. Member. There are soil testing laboratories available to the farmers in almost all the districts. Then there are Krishi Vigyan Kendras that have been set up in many places in the country and the District Agricultural Department arranges for soil testing for farmers whenever they approach them. Farmers are also being taught as to how to achieve economy in the use of the fertilizers by putting it at the right depth so that it reaches the root, and spreading it over a period. If the application of fertilizer is split up at intervals, then there can be economy also. All these are the various methods that are taught to the farmers through our training and visit system, through our extension workers. And I have said this repeatedly in the House.

If the hon. Member finds any difficulty, he can bring it to my notice and we shall see that in that part of the country where these facilities are not available, we approach the State Government to provide such facilities.

MR. CHAIRMAN: I think that is quite enough. Now we take up the next question.

श्रीमती सरोज खापर्डे : सर, मैंने कब से बार-बार हाथ उठाया है, क्वेश्चन 22 के लिए, आप ने देखा तक नही ।

श्री सभापति : मैं और आपको न देखूं?

श्रीमती सरोज खापर्डे : क्या करें हम, जबदस्ती से जो आपका ध्यान दिलाते हैं ।

श्री सभापति : यादव साहब बोल रहे थे तो शोर हो रहा था । अगली दफा हाथ उठाइये आप तो देखूंगा ।

डा. भाई महावीर : बुलाइये मत बेशक देखा जरूर करिए ।

MR. CHAIRMAN: Question No. 23.

SHRI KRISHNA CHANDRA PANT: If Shrimati Saroj cannot catch your eye, what is the chance of people like us?

SHRI AMARPROSAD CHAKRABORTY: Sir, it is my question and you don't look towards us.

PROF. SOURENDRA BHATTACHARJEE: Sir, you do not see towards us. You always see that side or the other side but not towards us.

श्री सभापति : क्वेश्चन नंबर 23 ले लिया है ।

श्री सैयद अहमद हाशमी : यह शिकायतें आम आपके बारे में हैं कि आप बहुत से लोगों की तरफ देखते नहीं है । मिस्टर माथुर ने हम से कहा है, आप के चेहरे में क्या रखा है जो देखेंगे ?

†[شری سید احمد ہاشمی : شکایتیں عام آپ کے بارے میں ہیں کہ آپ بہت سے لوگوں کی طرف دیکھتے نہیں ہیں ۔ مسٹر ماتھر نے ہم سے کہا ہے کہ آپ کے چہرہ میں کیا رکھا ہے جو دیکھیں گے ؟]

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैंने कहा खुदा के नूर की तरफ देखें उनकी तरफ देखें ?

श्री सभापति : शिकायतें तो मेरे खिलाफ बहुत हैं लेकिन मैं उनको सुन लेता हूं । मेरी शिकायतें अगर कोई सुने तो वह एक दफ्तर बन जाए ।

Repair and Restoration of Dwarkadhish Temple

*23. SHRI AMARPROSAD CHAKRABORTY: Will the Minister of EDUCATION be pleased to state:

(a) since when the Archaeological Survey of India has taken up the work of restoration of the Northern and Western porches of the Dwarkadhish Temple at Dwarka and by when the work is likely to be completed; and

(b) what is the total estimated cost of these repairs and restoration work of the temple and what is the number of workers engaged at present for the restoration work?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRIES OF EDUCATION AND CULTURE AND SOCIAL WELFARE (SHRI P. K. THUNGON): (a) and (b) The restoration of the Dwarkadhish temple, located near the sea, is a continuing process. The work of repairing the porches was started in August, 1979 and efforts are being made to complete it as early as possible. The sea-salt and earthquakes, in the past, have damaged sizeable number of stones which need to be replaced with new ones. The new stones will have to be of matching colour and texture from the appropriate quarry which has been found at a distance of more than 200 Km. away from the temple site. About three fourths of the stones required for the repairs and to be dressed and chiselled as per the original pattern have been so far assembled at site. This was against the original estimate, for this work for Rs. 2,99,200 approved in 1978. Meanwhile, owing to the recent escalation of material, labour and transportation rates, the estimate would require revision after the increased rates for the labour are approved by the District Collector. A total of Rs. 4,14,500 have been progressively spent upto March, 1982, on the repairs to the main temple. Workers are being hired at enhanced rates for resuming the repairs.

SHRI AMARPROSAD CHAKRABORTY: Mr. Chairman, Sir, I am on the temple now; neither I am on the soil nor fertilizer; but I am on the temple now.

Sir, a portion of this Dwarkadhish Temple was taken up for repairs and the work of repairs was said to have been started in August, 1979. If you look at the last line in the reply, you will find it says that repair work will be resumed. That means, resumption of repair work will be taken up afterwards. What does that show? Was the work stopped? An amount of Rs. 2,99,200 has already been spent as

†[ ]Transliteration in Arabic script.